पाठ 3

48ST2L

आप भले तो जग भला

(इस पाठ में लेखक ने कहा है कि हमें केवल अपने से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए। यदि हम दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे भी हमारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।)

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चैंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखायी पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखायी दिये। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अन्त में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखायी दिये। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलायी। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखायी दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो जाता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला','आप बुरे तो जग बुरा'। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ही ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंगे्रजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, "मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं।

उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हर एक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए।

जैसा ईसा ने कहा था, ”लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।“ दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बन्द कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिनभर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा:

निन्दक बाबा वीर हमारा, बिनहीं कौड़ी बहै बिचारा।

आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर ‘निन्दक’ हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गयी। हमारे मित्र तुरन्त बिगड़कर बोले, ”देखिए महाशय यह आपकी सरासर गलती है, आइन्दा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।“ बेचारे महाशय जी बड़े दुःखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जागृत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिये ही उठकर चले गये। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकान्त में कहा, ”देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?“

उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। बड़े प्रेम से बोले, ”जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आये तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।“

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और सन्तोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की

मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, ”सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।“

पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापू जी?"

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।"

"मैं समझ गया, बापू जी!“ पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ कहने की

श्रीमन्नारायण

श्रीमन्नारायण का जन्म सन् 1912 ई0 को इटावा में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा कोलकाता तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। आप गांधीवादी आर्थिक सिद्धान्तों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। आप भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य तथा गुजरात प्रान्त के राज्यपाल भी रह चुके हैं। श्रीमन्नारायण का शुरू से ही साहित्य के प्रति अनुराग था। आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'रोटी का राग' तथा 'मानव'। इनका निधन सन् 1978 में हो गया।

शब्दार्थ

प्रतिध्वनि = किसी वस्तु से टकराकर वापस आयी ध्वनि। **गश खाना** = मूर्च्छित होना। **मिसाल** = नमूना, नजीर, दृष्टान्त। **सबक** = शिक्षा, पाठ। **बर्ताव** = व्यवहार। **ऐब** = दोष , खोट, बुराई। **नुक्ताचीनी** = दोष निकालने का काम, छिद्रान्वेषण। **खास** = विशेष। **शहतीर** = पाटन के नीचे लगने वाली कड़ी। **अमल** = व्यवहार। **दादू** = भक्तिकालीन प्रसिद्ध कवि।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. पाठ में अनेक महापुरुषों जैसे- अब्राहम लिंकन, महात्मा गाँधी, ईसामसीह, सुकरात आदि द्वारा कही गयी बातों का उपयोग दृष्टान्तों के रूप में किया गया है। अन्य महापुरुषों ने भी विभिन्न विषयों पर इस तरह की बातें कहीं हैं। उनका संकलन कीजिए और उन्हें कागज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा की दीवारों पर चिपकाइए।

2. इस पाठ का शीर्षक ”आप भले तो जग भला“ है। यह एक लोकोक्ति है। इस तरह की अनेक लोकोक्तियाँ दैनिक बोलचाल में प्रचलित हैं। किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का संकलन कीजिए और उनका भाव अपने शब्दों में लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) हम महापुरुषों की वाणी और अपने से श्रेष्ठ जनों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। वे लोग जैसा कहते हैं वैसा ही करते हैं। ऐसे लोग हमें शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं। आपके परिवार तथा विद्यालय के जिस व्यक्ति ने आपको विशेष रूप से प्रभावित किया हो, उसके गुणों, व्यवहार के विषय में संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

(ख) पाठ में लेखक द्वारा अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कई दृष्टान्त (उदाहरण) दिये गये हैं। बताइए इनमें से आपको कौन सा उदाहरण सबसे अच्छा लगा और क्यों?

निबन्ध से

1. "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?" इस प्रश्न का अब्राहम लिंकन ने क्या जवाब दिया?

2. गाँधी जी ने अपने आश्रम को प्रयोगशाला क्यों कहा?

3. पाठ के शीर्षक ‘आप भले तो जग भला’ का क्या आशय है?

4. नीचे दी गयी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) दुनिया काँच के महल जैसी है, अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है।

(ख) अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी।

(ग) शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

(घ) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।

5. प्रश्नों में उत्तर के रूप में चार विकल्प दिये गये हैं, सही विकल्प पर सही का चिह्न लगाइए-

(क) लोग आपसे प्रेम और नम्रता का बर्ताव करेंगे, जब आप-

1. हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखेंगे।

2. लोगों को अपना शत्रु समझेंगे।

3. लोगों की ओर गुस्से से दौड़ेंगे।

4. लोगों के दोष न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देंगे।

(ख) बापू के किस गुण के कारण लोग उनकी ओर आकृष्ट होते थे-

1. आलोचना 2. अनुशासन

3. कठोरता 4. प्रेम और सहानुभूति

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टूट पड़ना, दुम हिलाना, दिल दुखाना, नुक्ताचीनी करना, आगबबूला होना, चुटकी लेना, दिमाग चढ़ना।

2. (क) आप तो बड़े समझदार हैं। -साधारण वाक्य

(ख) शायद कुछ लोगों का ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए भेजा है। -मिश्र वाक्य

(ग) वह प्रसन्नता से उछला कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया। -संयुक्त वाक्य

ऊपर तीन तरह के वाक्य दिये गये हैं- साधारण, मिश्र और संयुक्त। पाठ में आये हुए इन तीनों प्रकार के कम से कम दो-दो वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

3. 'यह तो बड़ी अशिष्टता होगी।' इस वाक्य में 'अशिष्टता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। भाववाचक संज्ञा शब्दों के अन्त में ता, पन, पा, हट, वट, त्व, आस प्रत्यय जुड़े रहते हैं। पाठ में आये हुए अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

इसे भी जानें

"भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है-बोलना और कहना।"